महान व्यक्ति वो जो अपनी भीतरी परिवर्तन को हमेशा आगे रखता

(राजयोगी ब्र.कु. कैलाश भाई)

हमने हर पल उसे निहारा, देखा कि कैसे उस महान आत्मा ने अपना जीवन जिया। मुझे भी सेवा हेतु उनका सानिध्य प्राप्त हुआ। जब इस ईश्वरीय यज्ञ का सबसे पहले और विशाल प्रोजेक्ट ज्ञानसरोवर का निर्माण करना तय हुआ तब दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे कहा कि आपको इस कार्य को देखना है। मैंने बिना कुछ सोचे-समझे हाँ कर दी। जबकि मुझे कंस्ट्रक्शन के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञान नहीं था।

हमने देखा, उस समयकाल में यज्ञ का सबसे विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण करना था तो सबकुछ चाहिए। लेकिन दादी ने बाबा के निर्देशानुसार सेवाओं के विस्तार को देखते हुए तय किया कि करना ही है।

दादी ने कुछ भी नहीं सोचा कैसे होगा, कब तैयार होगा? बस, बाबा का कहना और दादी जी का करना। दादी और बाबा के दिल का तार इतना जुड़ा हुआ था जैसे कि मोबाइल फोन करते ही हम बात करने लगते हैं।

दादी की बिना तार की बातचीत का नेटवर्क अटूट था, हॉट लाइन थी। दादी जी ने बाबा से हुई रूहरिहान क्लास में बताई कि बाबा के दो लाख बच्चे हैं तो हम सभी एक-एक रुपया रोज़ निर्माण के कार्य को भण्डारे में डालें तो कार्य हुआ ही पड़ा है।

दादी जी हमेशा मधुबन में रहने वाले सभी वरिष्ठ भाई-बहनों के सामने विचार रखती थीं और सबसे राय करके ही कोई भी कार्य करती थीं। ये उनके कार्य करने का तरीका बड़ा ही निराला था। दादी जी का सबके प्रति इतना रिगार्ड और रिसपेक्ट था, उतना ही सर्व ब्रह्मावत्सों का भी दादी जी के प्रति था। इसलिए, दादी जी भी कहतीं तो हर एक ये समझता कि मेरा सौभाग्य है। तो इसी उमंग-उत्साह में हाँ जी कर सभी तन्मयता से जुट जाते थे। सबकी विशेषताओं की अंगुली लगने से विशाल कार्य का पर्वत समय पर ही सम्पन्न हो गया।

दादी जी, ज्ञान का मर्म बड़ी सरलता और सहजता से बतातीं जो सामान्य से सामान्य जिज्ञासु के दिल पर छप जाता और उनके दिल में उमंग-उत्साह का संचार हो जाता। वे उसे पूरा करने में अपने तन, मन, धन, समय, श्वास, शक्ति से लग जाता। दादी का विशाल हृदय वह सबके प्रति कल्याणमयी भावना के कारण हरेक की कमज़ोरी के संस्कार को कमाल में परिवर्तन कर देता। यही कारण रहा कि मुझे कुछ भी प्रोजेक्ट के सम्बन्ध में न ही ज्ञान था और न ही समझ थी फिर भी इतना बड़ा कार्य खेल-खेल में कैसे पूरा हो गया। जब आज मैं सोचता हूँ तो दादी जी का वो स्नेह नैनों में झलक आता है। दादी जी कभी भी कार्य का श्रेय अपने आप को नहीं देतीं। हमेशा कहतीं बाबा का कार्य है, करनकरावनहार बाबा है, हमें तो सिर्फ निमित्त बन करना है। जब कार्य ही उनका तो यश और कीर्ति भी उनकी ही होगी ना!

मुझे याद है कि जब किसी ने कहा कि दादी, फलाने की ये आदत मुझे पसंद नहीं है, तो दादी ने कहा कि वो बात तो ठीक है, लेकिन उसकी आदत ठीक न हो और उसकी आदत के अनुरूप हमारी भावनाएं बदल जाती हों तो हम भी ज्ञानी तो नहीं ठहरे ना! यानी कि उनकी आदत का प्रभाव हमारे पर अगर पड़ता है तो हम उसे कैसे सुधार सकेंगे! हमें तो यह चेक करना है कि मेरे जीवन में भी ये आदतें तो नहीं हैं, उसे चेक कर बदलना है। किसी को बदलने में मेरे संस्कार रुकावट तो पैदा नहीं करते हैं! इसी के लिए तो हमें ज्ञान की शक्ति चाहिए।

हमने दादी को हमेशा बाप समान बनकर कर्म करते हुए देखा। उनके जीवन में हमने एक उत्तम ब्राह्मण की छवि देखी। वे हमेशा कहतीं कि **हम ब्राह्मणों का आचरण ही है सबका सुनना, सबका समाना, सबका सहन करना और सबको स्नेह देना।** सबको सहन कराना, ये हमारा आचरण नहीं है। सहन करना सीखो, सहन कराना नहीं। यह दादी के जीवन के इस मंत्र को हमने प्रत्यक्ष रूप में देखा। एक बार की बात है, दादी जी को सभी मिलते थे। एक भाई दादी के पास आकर बहुत ज़ोर-ज़ोर से बोलकर अपनी बात कहकर बाहर चला गया। उसके बाद मुझे दादी से मिलना था। जैसे ही मैं दादी जी के कक्ष में मिलने गया, दादी एकदम शांत और सौम्यता के साथ बैठी थीं जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं हो। दादी ने प्यार से मेरी बात सुनी और उसका समाधान भी किया। मैं वापस चला गया। पर मेरे मन में वो बात सारे दिन चलती रही कि वो पहले वाला भाई जो ऊँचे आवाज़ से दादी को कहकर गया। लेकिन दूसरे दिन भी जब मैं दादी के पास कारोबार अर्थ गया तो दादी वैसी ही शांत और सौम्यता की मुद्रा में थीं। मुझे मन ही मन ये उत्तर मिल गया कि महान व्यक्ति के लक्षण क्या होते हैं। दादी किसी की कैसी भी बात अपने दिल में नहीं रखती थीं। दादी हमेशा कहती थीं कि या तो बातें अपने दिल में रख सकती हूँ, या बाबा को, क्योंकि दिल तो एक ही है ना! ये हमने दादी के जीवन से हरपल अनुभव किया।

दूसरों के कल्याण के साथ-साथ स्व-उन्नति का ख्याल उनके जीवन से झलकता था। जो बाबा ने कहा, वही मुझे करना है, ये दादी के जीवन का महामंत्र रहा। दादी हमेशा कहती थीं कि कर्मातीत स्थिति का अनुभव अंत में थोड़े ही कर सकेंगे। अंत में तो उड़ ही जायेंगे। क्या उड़ने के बाद उस अनुभव का वर्णन करेंगे। कर्मातीत अवस्था का आनन्द अगर शरीर छोड़ने समय अनुभव में आएगा तो उसका वर्णन कब और कैसे करेंगे? कोई पूछे, इस स्थिति का अनुभव क्या है? तो क्या हम उसको ये कहें कि जब शरीर छोड़ूँ तब कहना। मैं सदा उसी स्टेज पर रहूँ जैसे आज ही कर्मातीत हूँ, कल नहीं होऊंगी। उड़ने के बाद तो मैं सुनाऊंगी ही नहीं कि मैं कितनी ऊँची स्थिति में हूँ! इससे अच्छा तो मैं वो फल अभी खाऊँ। इसके लिए, मैं आत्मा इतनी सम्पन्न रहूँ जो सर्व सम्बन्धों, सर्व गुणों, सर्व वस्तुओं का फल रोज़ खाऊँ। हमें तो इस स्थिति में बहुत मज़ा आता है। महान व्यक्ति अपने भीतरी परिवर्तन को हमेशा प्रथम रखता है और अपने जीवन से दूसरों को प्रशिक्षित करता है, ये हमने दादी में देखा। ऐसी दादी जी को विनम्रता से भावपूर्ण पुष्पांजलि अर्पित।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

साकार बाबा का प्रतिरूप बन दादी ने सबको दिया भरपूर प्रेम...

बाबा हर बच्चे को बहुत प्यार करते थे। गलती करने वाला भी बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना एहसास हो जाता था कि वह भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। मुरली क्लास के अलावा बाबा किसी को भी किसी गलती के बारे में कुछ नहीं बोलते थे। उसी प्रकार दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली बहुत ध्यान से सुन रहा है या नहीं। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरंत कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूंद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि भी ये ज्ञान-मोती का रूप धारण करती जा रही है। अतः हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा भी इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएं सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षाएं भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई गलती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर गलती नहीं सुनाते थे, मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। गलती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चेम्बर नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट से जाते थे और हम सभी बच्चे पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चेम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह ना दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक गलती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, गलती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना एहसास हो जाता था कि वह भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

दादी जी दिल में किसी की कोई बात नहीं रखती थीं। ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर खुशी न जाए।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

दादी जी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया

दादी जी बाबा के निर्देशों को बड़ी तत्परता से अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

दादी प्रकाशमणी को मैं बचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता सम्पन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुंज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। बारी-बारी से सबको भोजन बनाने की सेवा आती थी तो अपनी बारी में वे भोजन भी बहुत अच्छा बनाती थीं। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बताए गए नियमों के पालन में भी हमारे सामने सैम्पल बनकर रहीं। वे सरलता और स्नेह की मूरत बन मम्मा-बाबा तथा सर्व भाई-बहनों पर अपनापन उड़ेलती रहीं।

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारी मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

जब हम आबू में आये तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियां बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प, बोल में नहीं देखा।

सेवा के क्षेत्र में भी उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी जी ने कानपुर, लखनऊ, पटना, मुम्बई आदि अनेक स्थानों पर अनेकानेक आत्माओं को प्यारे बाबा के वर्से का अधिकारी बनाया। प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद, संगठन के किले को मज़बूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएं भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणी) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियां दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, कैरेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। लंदन तो सेवा का प्रमुख केन्द्र था। उन दिनों पूरे 4 साल मैं मधुबन नहीं आई। हाँ, दादियां पास आती रहीं। सन् 1977 में दादी हमारे पास आईं। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा किया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारम्भ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अन्तिम जन्म में ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नैचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी।